(कविता)
नारीः सोचो तो पहेली, समझो तो सहेली

हे नारी,
तुम उसके खरीदे मकान को घर बनाती हो,
उसके कमाए पैसों का खाना बनाती हो।
कुछ पैसों को तुम डिब्बों में छुपाती हो,
ज़रूरत पड़ने पर उसी पैसों से उसका हिम्मत बढ़ाती हो।
वह चार दीवारी तुम्हें काटती तो होगी,
खुला आसमान तुम खिड़की से झांकती तो होगी।
श्रृंगारों से अपने चोटों को ढकती हो,
हे नारी, तुम इतनी मजबूत कैसे हो सकती हो?
तुम्हारे बगीचे के फूल भी इतना खिलखिलाते नही
जितना झूठा तुम मुस्कुराती हो।
तुम्हारे भी बहुत से होंगे सपने,
उन सपनों को कहाँ छुपाती हो?
बढ़ाओ अपने सपनों की ओर कदम,
तुम इस समाज से क्यों डर जाती हो?
तुम गुणों में नर के सम्मान हो,
तुम अबला नही अपने घर का अभिमान हो,
और मत भूलो,
तुम ही शक्ति, तुम ही काली हो,
इसीलिए तुम नारी कहलाती हो,
इसीलिए तुम नारी कहलाती हो।

आरती साह
राजनीति विज्ञान
2022-25